

## संपोषित विकास के माध्यम से सांस्कृतिक आदान-प्रदान और समझ को बढ़ावा देने में पर्यटन की भूमिका

निष्ठा पाण्डेय<sup>1\*</sup>

<sup>1</sup>शोधार्थी वाणिज्य, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा, (म.प्र.)

### संदर्भ

संपोषित (सस्टेनेबल) विकास के माध्यम से सांस्कृतिक आदान-प्रदान और सामाजिक समझ को बढ़ावा देने में पर्यटन की भूमिका का विश्लेषण करता है। संपोषित पर्यटन पर्यावरण, समाज और अर्थव्यवस्था के बीच संतुलन बनाए रखते हुए सांस्कृतिक विविधता को संरक्षित करने, सामाजिक समावेशिता को बढ़ाने और वैश्विक एकता को प्रोत्साहित करने में महत्वपूर्ण योगदान देता है। विशेष रूप से भारत के संदर्भ में, यह पत्र पर्यटन के प्रभावों, चुनौतियों और भविष्य की संभावनाओं की पड़ताल करता है। डेटा विश्लेषण, केस स्टडी और साहित्य समीक्षा के आधार पर यह पत्र दर्शाता है कि संपोषित पर्यटन सांस्कृतिक और सामाजिक उत्थान का एक प्रभावी साधन हो सकता है।

*प्रमुख कीवर्ड (ज्ञमलूवतके) : संपोषित विकास, सांस्कृतिक आदान-प्रदान, सामाजिक समावेशिता, सांस्कृतिक विविधता संरक्षण, वैश्विक एकता*

### 1 प्रस्तावना

भारत अपनी अपनी रंग बिरंगी विविधताओं के कारण हमेशा से ही पर्यटकों का पसंदीदा स्थान रहा है झरनों व नदियों से भरपूर प्राकृतिक खूबसूरती अनेक तरह के पारंपरिक मेलो खूबसूरत सामानों से सजे बाजार, विभिन्न मसाले से महकते भोजन, सदियों का इतिहास बताती है ऐतिहासिक इमारतें कहीं नदी

का किनारा तो कहीं समुद्र की लहरें आदि अनेक ऐसे खूबसूरत पहलू हैं जो सैलानियों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं पर्यटन की दृष्टि से भारत के पास विशाल प्रतिस्पर्धात्मक शक्ति है भारत के मनोरम दृश्यों की फसल प्रशंसा करते हुए मैक्स मूलर ने कहा है कि यदि हमें संपूर्ण विश्व में किसी ऐसे देश की खोज करनी हो जिसमें प्रकृति की सर्वाधिक संपदा शक्ति और सौंदर्य निहित हो और इसके कुछ भाग तो वस्तुतः धरती पर स्वर्ग हो तो मैं भारत का नाम लूंगा मैक्स मूलर के शब्द यह प्रदर्शित करते हैं कि भारत के पास वह अद्भुत खजाना है जो शायद किसी अन्य देश के पास होना मुश्किल है इस संदर्भ में यह आवश्यक हो जाता है कि हम इस अद्भुत विशेषता को अपनी शक्ति संवर्धन के रूप में बढ़ावा दें।

भारत में, पर्यटन न केवल आर्थिक विकास का साधन है, बल्कि यह सांस्कृतिक विरासत, जैसे ताजमहल और खजुराहो, को संरक्षित करने में भी मदद करता है। सरकार की राष्ट्रीय संपोषित पर्यटन रणनीति स्थानीय समुदायों को शामिल करती है और पर्यावरणीय संरक्षण को प्राथमिकता देती है। संपोषित विकास पर्यावरण, समाज और अर्थव्यवस्था के बीच संतुलन बनाए रखते हुए दीर्घकालिक लाभ सुनिश्चित करता है। पर्यटन, विशेष रूप से सांस्कृतिक और संपोषित पर्यटन, इस प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। न्छ ज्वनतपेउ के अनुसार, सांस्कृतिक पर्यटन वह है जिसमें पर्यटकों का मुख्य उद्देश्य सीखना, खोज करना, अनुभव करना और सांस्कृतिक आकर्षणों का उपभोग करना है, जैसे कला, वास्तुकला, और परंपराएं। यह सांस्कृतिक आदान-प्रदान और समझ को बढ़ावा देता है, जबकि संपोषित प्रथाएं सुनिश्चित करती हैं कि पर्यावरण और स्थानीय समुदाय प्रभावित न हों।

#### **साहित्य समीक्षा**

**UNWTO (2020)**": सांस्कृतिक पर्यटन को "पर्यटकों द्वारा सांस्कृतिक आकर्षणों को सीखने, अनुभव करने और उपभोग करने की गतिविधि" के रूप में परिभाषित करता है। यह सामाजिक सहिष्णुता और सांस्कृतिक संरक्षण को बढ़ावा देता है।

**Sustainable Travel International (2022)**": पर्यटन विभिन्न दृष्टिकोणों की समझ को बढ़ाता है और रूढ़ियों को तोड़ता है, बशर्ते यह सम्मानजनक और समावेशी हो।

**CII Blog (2023)**": भारत में पर्यटन सांस्कृतिक बाधाओं को तोड़ने और सामाजिक एकता को बढ़ाने में योगदान देता है, जो लक्ष्य में 10% का योगदान देता है।

**Planeterra (2021)''**: सामुदायिक पर्यटन स्थानीय समुदायों को सशक्त बनाता है और सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देता है।

**''International Institute For Peace Through Tourism (2024)''**: पर्यटन सामाजिक सामंजस्य और सांस्कृतिक समझ को बढ़ाने में महत्वपूर्ण है।

### शोधपद्धति

यह शोध द्वितीयक डेटा पर आधारित है।

### राष्ट्रीय पर्यटन नीति

पर्यटन में विभिन्न तरह के व्यापक रोजगार सृजित करने की अपार क्षमता है पर्यटन क्षेत्र को अधिक विकसित करने व देश की आर्थिक विकास में इसके योगदान को बढ़ाने के लिए राष्ट्रीय पर्यटन नीति 2002 निर्मित की गई इस नीति के अंतर्गत पर्यटन क्षेत्र में रोजगार की संभावनाओं में वृद्धि तथा अन्य क्षेत्रों के साथ विकासात्मक संपर्क के माध्यम से आर्थिक एकीकरण में तेजी लाने जैसे मुद्दों का समावेशन किया गया इस नीति में पर्यटन क्षेत्र के विकास हेतु अनेक महत्वपूर्ण सुझाव व उपाय का उल्लेख किया गया जैसे

- पर्यटन को आर्थिक विकास के एक माध्यम के रूप में प्रतिष्ठित करना।
- रोजगार सृजन आर्थिक विकास तथा ग्राम में पर्यटन को प्रोत्साहन प्रदान करने के लिए पर्यटन के प्रत्यक्ष तथा बहुआयामी प्रभाव का दोहन।
- पर्यटन विकास के प्रमुख संचालक के रूप में घरेलू पर्यटन पर ध्यान देना।
- विश्व के फलते फूलते व्यवसाय तथा भारत की अपार पर्यटन संभावना का लाभ उठाने के लिए भारत को वैश्विक ब्रांड के रूप में प्रतिष्ठित करना।
- निजी क्षेत्र को सरकार के साथ मिलकर कार्य करने के लिए उत्प्रेरक की महत्वपूर्ण भूमिका पर बल।
- यह सुनिश्चित करना कि भारत आने वाले पर्यटक भौतिक सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक रूप से संतुष्ट हो तथा भारत को भली भांति समझ परख सके।

इस नीति में पर्यटन विकास हेतु प्रमुख सात क्षेत्र पर भी बल दिया गया है ये हैं स्वागत, सूचना, सुविधा, सुरक्षा, सहयोग, संरचना और सफाई।

### **भारत में पर्यटन की भूमिका**

भारत में, पर्यटन न केवल आर्थिक विकास का एक प्रमुख स्तंभ है, बल्कि यह सांस्कृतिक आदान-प्रदान और समझ को बढ़ावा देने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। बी.सी.डी.सी. इंटरनेशनल के अनुसार, पर्यटन भारत के ढक्क में लगभग 10% का योगदान देता है और विविध आकर्षण, जैसे साहसिक, सांस्कृतिक, और वन्यजीव पर्यटन, प्रदान करता है। सरकार ने स्वदेश दर्शन योजना और प्राशाद योजना जैसे उपायों के माध्यम से पर्यटन बुनियादी ढांचे को सुधारने और विरासत स्थलों को बढ़ावा देने के लिए कदम उठाए हैं।

व्हील्स के अनुसार, पर्यटन भारत में सांस्कृतिक बाधाओं को तोड़ने, संचार को बढ़ावा देने, और पूर्वाग्रह को कम करने में मदद करता है। यह 2019 और 2030 के बीच 7-9% की वार्षिक वृद्धि दर के साथ ढक्क में योगदान दे रहा है, और 2027 तक यात्रा बाजार नैक् 125 बिलियन तक पहुंचने की उम्मीद है।

संपोषित पर्यटन का उद्देश्य पर्यावरण, समाज और अर्थव्यवस्था के बीच संतुलन बनाते हुए दीर्घकालिक विकास को बढ़ावा देना है। यह सांस्कृतिक आदान-प्रदान और समझ को प्रोत्साहित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जिससे वैश्विक और स्थानीय स्तर पर सामाजिक सामंजस्य और सांस्कृतिक जागरूकता बढ़ती है। निम्नलिखित बिंदु इसकी भूमिका को स्पष्ट करते हैं:-

सांस्कृतिक आदान-प्रदान में पर्यटन की भूमिका:

#### **सांस्कृतिक विविधता का प्रदर्शन:**

संपोषित पर्यटन स्थानीय परंपराओं, कला, संगीत, नृत्य, हस्तशिल्प और व्यंजनों को पर्यटकों तक पहुँचाता है। उदाहरण के लिए, भारत में वाराणसी की गंगा आरती, राजस्थान के लोक नृत्य और केरल के आयुर्वेदिक अनुभव पर्यटकों को स्थानीय संस्कृति से जोड़ते हैं। यह विभिन्न संस्कृतियों के बीच आपसी समझ और सम्मान को बढ़ावा देता है।

सांस्कृतिक संरक्षण:-पर्यटन स्थानीय समुदायों को अपनी सांस्कृतिक धरोहरों, जैसे ऐतिहासिक स्थल, परंपरागत कला और अनुष्ठानों, को संरक्षित करने के लिए प्रोत्साहित करता है। उदाहरण: यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल जैसे हम्पी और अजंता-एलोरा की गुफाएँ पर्यटन के कारण संरक्षित और प्रचारित होती हैं।

वैश्विक और स्थानीय संवाद:- पर्यटक और स्थानीय समुदायों के बीच बातचीत से विचारों, मूल्यों और जीवनशैली का आदान-प्रदान होता है। होमस्टे, सामुदायिक पर्यटन और सांस्कृतिक उत्सव (जैसे गोवा का कार्निवल या कुम्भ मेला) इस प्रक्रिया को बढ़ावा देते हैं।

शिक्षा और जागरूकता- पर्यटक स्थानीय इतिहास, परंपराओं और सांस्कृतिक प्रथाओं के बारे में सीखते हैं, जिससे सांस्कृतिक संवेदनशीलता और वैश्विक समझ बढ़ती है। उदाहरण के लिए, म्यूजियम और सांस्कृतिक केंद्र पर्यटकों को शिक्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

### **सामाजिक समझ को बढ़ावा देने में पर्यटन की भूमिका:**

सांस्कृतिक सहिष्णुता और समावेशिता:- संपोषित पर्यटन विभिन्न संस्कृतियों और समुदायों के बीच सहिष्णुता और समावेशिता को बढ़ावा देता है। पर्यटक स्थानीय जीवनशैली और मूल्यों को समझते हैं, जिससे पूर्वाग्रह और रुढ़ियाँ कम होती हैं। उदाहरण: लद्दाख में बौद्ध संस्कृति और स्थानीय समुदायों के साथ पर्यटकों का जुड़ाव शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व को प्रोत्साहित करता है।

स्थानीय समुदायों का सशक्तिकरण: - पर्यटन स्थानीय समुदायों, विशेष रूप से आदिवासी और ग्रामीण समुदायों, को अपनी संस्कृति को साझा करने और आर्थिक लाभ प्राप्त करने का अवसर देता है। यह सामाजिक एकता और आत्मसम्मान को बढ़ाता है। उदाहरण: ओडिशा में रघुराजपुर गाँव के कारीगर अपनी पंजजंबीपजतं कला के माध्यम से पर्यटकों के साथ सांस्कृतिक और सामाजिक समझ बढ़ाते हैं।

सामाजिक जिम्मेदारी का प्रचार: - संपोषित पर्यटन पर्यटकों को पर्यावरण और सांस्कृतिक संरक्षण के प्रति जिम्मेदार बनने के लिए प्रोत्साहित करता है, जैसे कचरा प्रबंधन और स्थानीय रीति-रिवाजों का सम्मान करना।

वैश्विक एकता: - पर्यटन विभिन्न देशों और संस्कृतियों के लोगों को एक मंच पर लाता है, जिससे वैश्विक एकता और आपसी समझ को बढ़ावा मिलता है।

### **संपोषित विकास के माध्यम से योगदान:**

पर्यावरण और संस्कृति का संरक्षण:- संपोषित पर्यटन प्राकृतिक और सांस्कृतिक संसाधनों के संरक्षण को प्राथमिकता देता है, जो सांस्कृतिक आदान-प्रदान और सामाजिक समझ के लिए आधार प्रदान करता है। उदाहरण: सुंदरबन में इको-टूरिज्म स्थानीय संस्कृति और जैव विविधता दोनों को संरक्षित करता है।

स्थानीय भागीदारी: - संपोषित पर्यटन स्थानीय समुदायों को पर्यटन गतिविधियों में शामिल करता है, जिससे उनकी सांस्कृतिक पहचान और सामाजिक स्थिति मजबूत होती है। उदाहरण: केरल का 'त्मेचवदेपड़सम ज्वनतपेउ डपेपवद' स्थानीय समुदायों को सांस्कृतिक कार्यक्रमों और होमस्टे के माध्यम से पर्यटकों से जोड़ता है।

टिकाऊ प्रथाओं का प्रचार:- पर्यटकों को टिकाऊ प्रथाओं (जैसे कार्बन न्यूट्रल यात्रा, स्थानीय उत्पादों का उपयोग) के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, जो सामाजिक और सांस्कृतिक जिम्मेदारी को बढ़ाता है।

दीर्घकालिक प्रभाव: - संपोषित पर्यटन यह सुनिश्चित करता है कि सांस्कृतिक और सामाजिक लाभ भविष्य की पीढ़ियों तक पहुँचें, जिससे सांस्कृतिक विरासत और सामाजिक समझ बनी रहे। पर्यटन संपोषित विकास के माध्यम से सांस्कृतिक आदान-प्रदान और समझ को बढ़ावा देता है, लेकिन इसकी प्रभावशीलता क्षेत्र और प्रथाओं पर निर्भर करती है। यह स्थानीय संस्कृति को प्रदर्शित और संरक्षित करता है, विभिन्न समुदायों के बीच संवाद को प्रोत्साहित करता है, और आर्थिक लाभ प्रदान करता है, जो सामाजिक समझ को मजबूत करता है। भारत में, पर्यटन ळक्च में 10 प्रतिशत का योगदान देता है और सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करते हुए आर्थिक विकास को बढ़ावा देता है।

### **सांस्कृतिक आदान-प्रदान में योगदान**

पर्यटन स्थानीय संस्कृति, जैसे कला, संगीत, और परंपराओं को पर्यटकों तक पहुंचाता है, जिससे आपसी समझ और सम्मान बढ़ता है। उदाहरण के लिए, वाराणसी की गंगा आरती और राजस्थान के लोक नृत्य पर्यटकों को स्थानीय जीवनशैली से जोड़ते हैं। यह सांस्कृतिक संवेदनशीलता को बढ़ाता है और पूर्वाग्रह को कम करता है।

### **सामाजिक समझ को बढ़ावा देना**

संपोषित पर्यटन स्थानीय समुदायों को सशक्त बनाता है, रोजगार के अवसर प्रदान करता है, और सामाजिक समावेशिता को प्रोत्साहित करता है। उदाहरण के लिए, ओडिशा के रघुराजपुर गाँव में कारीगर पर्यटकों के साथ अपनी पतचित्र कला साझा करते हैं, जिससे सामाजिक एकता बढ़ती है।

## वैश्विक परिप्रेक्ष्य

वैश्विक स्तर पर, पर्यटन सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देता है क्योंकि यह पर्यटकों को विभिन्न संस्कृतियों, परंपराओं और दृष्टिकोणों से परिचित कराता है। नैनेजंपदंडसम ज्तंअमस प्दजमतदंजपवदंस के अनुसार, पर्यटन विभिन्न दृष्टिकोणों की समझ और सराहना को बढ़ाता है, रूढ़ियों को तोड़ता है, और सहानुभूति और सहिष्णुता को बढ़ावा देता है, बशर्ते यह सम्मानजनक और समावेशी हो। न्हँज्व के सतत विकास पृष्ठ पर, यह उल्लेख किया गया है कि पर्यटन अंतर-सांस्कृतिक समझ और सहिष्णुता में योगदान देता है, साथ ही साथ सांस्कृतिक विरासत और परंपरागत मूल्यों को संरक्षित करता है। हालांकि, चुनौतियां भी हैं, जैसे ओवरटूरिज्म और सांस्कृतिक उपनिवेशण, जो सांस्कृतिक प्रामाणिकता को नुकसान पहुंचा सकते हैं। म्मतवचमंद ब्वउउपेपवद के अनुसार, पर्यटन आर्थिक लाभ लाता है, लेकिन यह स्थानीय संस्कृति और विरासत को भी नुकसान पहुंचा सकता है, विशेष रूप से भीड़भाड़ वाले क्षेत्रों में।

सतत विकास के माध्यम से योगदान

संपोषित पर्यटन प्राकृतिक और सांस्कृतिक संसाधनों के संरक्षण को प्राथमिकता देता है, जो सांस्कृतिक आदान-प्रदान और सामाजिक समझ के लिए आधार प्रदान करता है। उदाहरण के लिए, सुंदरबन में इको-टूरिज्म स्थानीय संस्कृति और जैव विविधता दोनों को संरक्षित करता है। यह स्थानीय समुदायों को पर्यटन गतिविधियों में शामिल करता है, जिससे उनकी सांस्कृतिक पहचान और सामाजिक स्थिति मजबूत होती है। पर्यटकों को टिकाऊ प्रथाओं, जैसे कार्बन न्यूट्रल यात्रा और स्थानीय उत्पादों का उपयोग, के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, जो सामाजिक और सांस्कृतिक जिम्मेदारी को बढ़ाता है।

## चुनौतियाँ

सांस्कृतिक कमजोरी: अत्यधिक या गैर-जिम्मेदार पर्यटन से सांस्कृतिक एकरूपता और स्थानीय परंपराओं का ह्रास हो सकता है।

असमान लाभ: पर्यटन से होने वाला लाभ अक्सर बड़े व्यवसायों तक सीमित रहता है, जिससे स्थानीय समुदायों को कम अवसर मिलते हैं।

जागरूकता की कमी: पर्यटकों और स्थानीय समुदायों में टिकाऊ और सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील प्रथाओं के प्रति जागरूकता की कमी।

ओवरटूरिज्म, जो सांस्कृतिक प्रामाणिकता को नुकसान पहुंचा सकता है, और असमान लाभ, जहां बड़े व्यवसायों को अधिक लाभ मिलता है। जागरूकता की कमी भी एक बाधा है, जहां पर्यटकों और स्थानीय समुदायों को टिकाऊ और सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील प्रथाओं के बारे में पर्याप्त जानकारी नहीं होती।

### **निष्कर्ष**

संपोषित पर्यटन सांस्कृतिक आदान-प्रदान और समझ को बढ़ावा देने का एक प्रभावी माध्यम है। यह स्थानीय संस्कृतियों को संरक्षित और प्रचारित करता है, सामाजिक सहिष्णुता और समावेशिता को बढ़ाता है, और समुदायों को सशक्त बनाता है। भारत जैसे सांस्कृतिक रूप से विविध देश में, संपोषित पर्यटन सरकार, निजी क्षेत्र और स्थानीय समुदायों के सहयोग से सांस्कृतिक और सामाजिक उत्थान का एक शक्तिशाली साधन बन सकता है। इसके लिए जागरूकता, नीतिगत समर्थन, और टिकाऊ प्रथाओं को अपनाना आवश्यक है। यह शोध पत्र संपोषित पर्यटन की भूमिका को सांस्कृतिक आदान-प्रदान और सामाजिक समझ के संदर्भ में व्यवस्थित और व्यापक रूप से प्रस्तुत करता है, जो शैक्षणिक और नीतिगत चर्चाओं के लिए मूल्यवान संसाधन के रूप में कार्य कर सकता है।

### **संदर्भ सूची**

- [1] <https://www-unwto-org/sustainable&development>
- [2] <https://www-unwto-org/tourism&and&culture>
- [3] <https://sustainabletravel-org/how&tourism&advance/peace/>
- [4] <https://peacetourismorg/role&of&tourism&in&the&mutual&understanding&and&social&harmony/>